Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 9, June-2019, ISSN 2230-7540

उत्तरी पश्चिमी दिल्ली के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक स्थिरता व शैक्षिक उपलब्धता के सम्बन्ध का एक अध्ययन

Geeta Dalal[1]* Dr. Pawan Kumar[2]

[1] Research Scholar, Department of Education, Madhav University, Rajasthan

[2] Assistant Professor, Department of Education, Madhav University, Rajasthan

सारांश - *इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धता तथा संवेगात्मक स्थिरता के सम्बन्ध को जानना था। इसके लिए शोधकत्री ने 300 विद्यार्थियों का चयन उत्तरी पश्चिमी दिल्ली के विद्यालयों से यादृच्छिक निदर्शन विधि के माध्यम से किया। संवेगात्मक स्थिरता की जाँच हेतु न्यादर्श पर संजय बोहरा द्वारा निर्मित संवेगात्मक स्थिरता प्रश्नावली का प्रयोग किया गया तथा शैक्षिक उपलब्धता की जाँच के लिए कक्षा दस के प्रतिशत अंकों को आधार माना गया। आकडों के आकलन एवं परिकल्पना परीक्षण हेतु माध्य, मानक विचलन, टी-परीक्षण व सह-सम्बन्ध गुणक सांख्यकीय विधियों का प्रयुक्त किया गया। अध्ययन के परिणामों से ज्ञात होता है कि छात्रों का संवेगात्मक स्थिरता स्कोर छात्राओं की अपेक्षा उच्च था व उनमें सार्थक अन्तर पाया गया। सरकारी व गैरसरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक स्थिरता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। छात्रों का शैक्षिक प्रदर्शन छात्राओं की अपेक्षा निम्न रहा एवं सरकारी तथा गैरसरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धता स्तर में सार्थक अन्तर पाया गया। विद्यार्थियों के संवेगात्मक स्थिरता तथा शैक्षिक उपलब्धता में उच्च धनात्मक सह-सम्बन्ध परिकलित हुआ।*

मूल शब्द - *संवेगात्मक स्थिरता, शैक्षिक उपलब्धि व वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी।*

----------X----------

प्रस्तावना

शैक्षिक उपलब्धता विद्यार्थियों के लिए विशेष महत्त्व तथा प्रभुत्त्व रखती है। यह विशेषतः दो कारकों से प्रभावित होती है - व्यक्तिपरक तथा वस्तुगत। वरिष्ठ स्तरीय शिक्षा विद्यार्थियों के सामाजिक तथा आर्थिक विकास के अवसर तथा सुयोग के लिए प्रवेश द्वार की भूमिका अदा करती है। विद्यार्थी के शुभ्र व उज्ज्वल भविष्य के लिए शिक्षा का स्तर उत्तम होना अपरिहार्य है। वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी अनेक जिम्मेदारियों, प्रवादों व चुनौतियों से घिरे होते हैं जिस कारण वे तनाव व दबाव महसूस करते हैं। शैक्षिक उपलब्धता की सपफलता के लिए उनका संवेगात्मक रूप से स्वस्थ होना अत्यावश्यक है। जहाँ तक विद्यार्थियों के भावात्मक तथा अन्तव्र्यैक्तिक उद्विकास का सम्बन्ध है, उसमें शैक्षिक जीवन चुनौतियों से परिपूर्ण है। हलावा (2006) द्वारा कथित है "शैक्षिक उपलब्धि विद्यालयी व्यवस्था के अन्तर्गत कक्षा-कार्य की वास्तविक क्रियान्वयन मे निपुणता है"। वर्तमान वैज्ञानिक युग में वैयक्तिक की उचित संवृद्धि के लिए शारीरिक, सामाजिक व मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं में समीकरण होना चाहिए।

भावनात्मक स्थिरता

भावनात्मक स्थिरता व्यक्ति के वो मनोवैज्ञानिक लक्षण होते हैं जो व्यक्तित्त्व को निर्धारित करते हैं। यह जीवन की जटिल व दुःसाध्य परिस्थितियों में उत्पन्न तनाव से निपटने का सामथ्र्य दर्शाता है। शैक्षिक, व्यावसायिक तथा खेल में बेहतर प्रदर्शन के लिए भावनात्मक स्थिरता की प्रमुख भूमिका होती है। यहाँ प्रश्न केवल कठिन संवेगात्मक परिस्थितियों में सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता से नहीं है, बल्कि निर्धारित कार्य मे दक्षता पूर्ण परिपालन में उत्पन्न

www.ignited.in

तनावग्रस्त प्रकृति के विरूद्ध विरोध करने की क्षमता से है। संवेग जीवन में प्रभावशाली अहमियत रखते हैं। संवेगों पर संयम व नियंत्राण समृद्ध जीवन के लिए परमावश्यक है। जो व्यक्ति संवेग पर संयम रखने में चूक जाते हैं वे जीवन में अनेक समस्याओं का सामना करते हैं। भावनात्मक स्थिरता मानसिक स्वास्थ्य के सात सूचकों में से एक है (मैथीन 2011)। भावनात्मक स्थिरता एक प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत विवेक से वैयक्तिक बेहतर सांवेगिक स्वास्थ्य के लिए निरन्तर प्रयास व संघर्ष करता है (सिम्सन 1974)। वर्तमान में अनुचर वर्ग महत्त्वाकांक्षी तथा स्पर्धात्मक समाज में सम्पन्न रूप से जीवित रहने के लिए कडी महनत करता है। दूसरी ओर विद्यार्थियों में दबाव दिन-प्रतिदिन बढ रहा है जिससे वे अपने संवेगों पर नियंत्राण खो देते हैं तथा असन्तुलित व कुसमायोजित व्यक्तित्त्व का निर्माण हो जाता है। भावनात्मक स्थिरता को पर्यावरण के प्रति तन्यकता व अनुकूल संक्रमण के रूप में पारिभाषित किया जा सकता है।

शैक्षिक-उपलब्धता

शैक्षिक उपलब्धता को कक्षा व कार्यप्रणाली के अन्त में समग्र अधिगम के रूप में माना जाता है। विद्यार्थी के अधिगम परिणामों को परीक्षा के रूप में मापा जाता है। पफ्रीमैन के अनुसार "शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण वह परीक्षण है जो किसी विशेष विषय अथवा पाठ्ड्ढक्रम के विभिन्न विषयों में व्यक्ति के ज्ञान, समझ और कुशलताओं का मापन करता है।" शैक्षिक प्रदर्शन के अंकों के आधार पर भी विद्यार्थी के अवसर तथा दिशाएँ निर्धारित होती हैं। शैक्षिक उपलब्धि स्तर विद्यार्थी के भविष्य को निर्धारित करता है। पाठ्यक्रम के समापन पर विद्यार्थी द्वारा अर्जित ज्ञान का शैक्षिक उपलब्धि के रूप में माना जाता है।

उद्देश्य

1. छात्र तथा छात्राओं की भावनात्मक स्थिरता में अन्तर ज्ञात करना।
2. सरकारी तथा गैरसरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की भावनात्मक स्थिरता में अन्तर ज्ञात करना।
3. छात्र तथा छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धता में अन्तर ज्ञात करना।
4. सरकारी तथा गैरसरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धता में अन्तर ज्ञात करना।
5. विद्यार्थियों की भावनात्मक स्थिरता तथा शैक्षिक उपलब्धता में परस्पर सम्बन्ध ज्ञात करना।

परिकल्पना

1. छात्र तथा छात्राओं की भावनात्मक स्थिरता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. सरकारी तथा गैरसरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की भावनात्मक स्थिरता में कोई अन्तर नहीं है।
3. छात्र तथा छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. सरकारी तथा गैरसरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. विद्यार्थियों की भावनात्मक स्थिरता तथा शैक्षिक उपलब्धि में कोई परस्पर सह-सम्बन्ध नहीं है।

सम्बद्ध-साहित्य

माधवन, वी (2016) ने तिरूचिरापल्ली जिले के ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों पर संवेगात्मक स्थिरता व समायोजन के परिप्रेक्ष्य में मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया। इन्होंने अध्ययन में पाया कि लगभग पचास प्रतिशत विद्यार्थियों ने संवेगात्मक स्थिरता नहीं है तथा वे कुसमायोजन से भी ग्रसित हैं।

बोहर, पदमा (2017), ने वरिष्ठ माध्यमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धता तथा संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन किया। इनके अध्ययन के परिणास्वरूप ज्ञात हुआ कि छात्रा तथा छात्राओं के संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक सम्बन्ध नहीं हैं।

एक अन्य अध्ययन में पाया गया कि सरकारी तथा गैरसरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है। (कौर 2013)। आलीम (2005) ने छात्र तथा छात्राओं के संवेगात्मक स्थिरता के माध्य स्कोर का आकलन किया तथा उससे परिलक्षित हुआ कि छात्र छात्राओं की अपेक्षा संवेगात्मक रूप से अधिक स्थिर हैं।

www.ignited.in

विधि - प्रस्तुत अध्ययन के लिए वर्णनात्मक विधि को प्रयोग में लाया गया।

न्यादर्श - शोधकत्री द्वारा उत्तर-पश्चिमी दिल्ली के वरिष्ठ विद्यालयों में ग्यारहवीं कक्षा के 300 (150 छात्र तथा 150 छात्राएँ) विद्यार्थियों को यादृच्छिक प्रणाली द्वारा समाकलित किया गया।

उपकरण -

1. भावनात्मक स्थिरता के मापन हेतु संजय बोहरा (साइ-कॉम सर्विस) द्वारा निर्मित संवेगात्मक स्थिरता प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।

2. शैक्षिक उपलब्धता के मापन हेतु कक्षा दस के अंकों को आधार माना गया।

आंकडों का विश्लेषण एवं निर्वचन -

तालिका - 1

छात्र तथा छात्राओं की संवेगात्मक स्थिरता के सार्थकता अन्तर का अध्ययन

चर	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाप विचलन	'टी' मूल्य	स्वतन्त्रा अंश	सार्थकता अन्तर स्तर
संवेगात्मक स्थिरता	छात्र	150	74.50	15.10	6.5	298	अन्तर सार्थक है
	छात्राएँ	150	64.74	12.32			

उपरोक्त सारणी (1) में परिकलित 'टी' मूल्य 6.5 है जो दोनों विश्वास स्तरों 0.01 तथा 0.05 पर मानक मानों से अधिक है। इससे सिद्ध होता है कि छात्र तथा छात्राओं की संवेगात्मक स्थिरता में सार्थक अन्तर है। अतः शोध पूर्व निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। छात्रों का संवेगात्मक स्थिरता स्कोर छात्राओं की अपेक्षा अधिक है।

तालिका - 2

सरकारी तथा गैरसरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक स्थिरता के सार्थकता अन्तर का अध्ययन

चर	छात्र समूह	संख्या	माध्य	प्रमाप विचलन	'टी' मूल्य	स्वतन्त्रा अंश	सार्थकता अन्तर स्तर
संवेगात्मक स्थिरता	सरकारी विद्यालय	150	68.08	14.76	1.73	298	अन्तर सार्थक नहीं है
	गैरसरकारी विद्यालय	150	71.16	16.20			

तालिका 2 से स्पष्ठ होता है कि दोनों समूहों (सरकारी तथा गैरसरकारी विद्यालय) के विद्यार्थियों की संवेगात्मक स्थिरता में मान (1.73) है जो सार्थकता स्तर 0.01 तथा 0.05 के मानक मानों से कम है। अतः इस समूँह के संवेगात्मक स्थिरता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। परन्तु गैरसरकारी विद्यालय के विद्यार्थी संवेगात्मक रूप से सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक स्थायी हैं।

तालिका - 3

छात्र तथा छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धता स्तर की तुलना

चर	समूह	संख्या	माध्य	प्रमाप विचलन	'टी' मूल्य	स्वतन्त्रा अंश	सार्थकता अन्तर स्तर
संवेगात्मक स्थिरता	छात्र	150	65.92	14.30	2.15	298	अन्तर सार्थक है
	छात्राएँ	150	65.56	15.49			

शैक्षिक उपलब्धता में लिंग भेद आकलन के लिए 'टी' परीक्षण की गणना की गई। तालिका 3 के संदर्शन से ज्ञात होता है कि छात्र तथा छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धता स्तर में 0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया, परन्तु 0.01 पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। दोनों समूहों के मध्यमान की तुलना करने पर विदित होता है कि छात्राओं का शैक्षिक उपलब्धता स्तर छात्रों की अपेक्षा अधिक है।

तालिका - 4

सरकारी तथा गैरसरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि स्तर की तुलना

चर	छात्र समूह	विद्यार्थी संख्या	माध्य	प्रमाप विचलन	'टी' मूल्य	स्वतन्त्रा अंश	सार्थकता अन्तर स्तर
शैक्षिक उपलब्धता	सरकारी	150	65.04	13.84	3.15	298	अन्तर सार्थक है
	गैरसरकारी	150	70.44	15.90			

तालिका 4 प्रस्तुत करती है कि 'टी' मान 3.15 है। 298 स्वतन्त्रा अंश पर सार्थकता के लिए 'टी' का मानक मान 0.01 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर क्रमशः 2.59 तथा 1.96 है जो कि दोनों सार्थकता स्तरों पर मानक मानों से अधिक है। गैरसरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का शैक्षिक प्रदर्शन सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की अपेक्षा अच्छा है।

www.ignited.in

तालिका - 5

विद्यार्थियों के संवेगात्मक स्थिरता तथा शैक्षिक उपलब्धता स्तर में परस्पर सम्बन्ध का अध्ययन

क्रमांक	चर	विद्यार्थी संख्या	सह–सम्बन्ध गुणक (r)	स्वतन्त्रा अंश	सार्थकता स्तर
1	संवेगात्मक स्थिरता	300	0.82	298	स्तर सार्थक पाया गया
2	शैक्षिक उपलब्धता				

तालिका 5 के परिणाम से स्पष्ठ होता है कि विद्यार्थियों के संवेगात्मक स्थिरता तथा शैक्षिक उपलब्धता स्तर में सहसंबन्ध गुणक (r) का मान .821 ज्ञात हुआ। इस प्रकार यह उच्च धनात्मक सम्बन्ध है। अतः शून्य परिकल्पना "विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धता स्तर तथा संवेगात्मक स्थिरता में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।" रद्द की जाती है। उच्च संवेगात्मक स्थिरता विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धता स्तर में वृद्धि करता है। ट्रैपमेंन (2007) द्वारा शोध में पाया गया कि शैक्षिक उपलब्धता संवेगात्मक स्थिरता बर्हिमुखता से सीधे सम्बन्धित होती है।

शोध परिणाम

1. छात्र तथा छात्राओं की संवेगात्मक स्थिरता में सार्थक अन्तर पाया गया। इसमें छात्रों का संवेगात्मक स्कोर छात्राओं की अपेक्षा अधिक है।

2. गैरसरकारी विद्यालय तथा सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक स्थिरता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

3. छात्र तथा छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धता स्तर में सार्थक अन्तर ज्ञात हुआ। इसमें छात्रों का शैक्षिक प्रदर्शन स्कोर छात्राओं की अपेक्षा निम्न रहा।

4. सरकारी तथा गैरसरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धता स्तर में सार्थक अन्तर पाया गया।

5. संवेगात्मक स्थिरता एवं शैक्षिक उपलब्धता स्तर में उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध ज्ञात हुआ। अर्थात् संवेगात्मक रूप से स्थायी व स्थिर छात्र शिक्षा में भी उच्च प्रदर्शन करते हैं।

अनुशंसा

परिणामों के आधार पर निम्नलिखित सुझाव -

1. जिन विद्यार्थियों ने संवेगात्मक स्थिरता में उच्च स्कोर प्राप्त किया है, वे शैक्षिक उपलब्धता स्तर पर भी खरे उतरे हैं, अतः अभिभावकों को बालक के साथ अधिकतम समय व्यतीत करना चाहिए।

2. अभिभावक को बालक के व्यवहारात्मक परिवर्तनों की उपेक्षा व अवहेलना नहीं करनी चाहिए।

3. कक्षा में अध्यापक को भी समय समय पर विद्यार्थियों की प्रशंसा करनी चाहिए।

4. विद्यालय में विद्यार्थियों के संवेगात्मक स्वास्थ्य के लिए समय समय पर संगोष्ठीका आयोजन कराना चाहिए जिसमें अभिभावक को भी सम्मिलित किया जाए।

संदर्भ सूची

अलीम एस. (2005) इमोशनल स्अेविलिटी एमोंग कॉलेज यूथ, जरनल ऑफ़ द इण्डियन अकेडमी ऑफ़ एप्लाइड साइकोलॉजी।3 (1-2), 100-102

एन. गुनेस्कर व एन पफागुलेंथी (2016) ए स्टडी ऑन इमोशनल मैच्योरिटी एण्ड एकेडिमिक एचीवमेंट ऑफ़ स्टूडेंट्स एट सेकेण्डरी लेवल, शैनलेक्स इंटरनेशनल जनरल ऑफ़ एजूकेशन 3 (4) (7-13)

बेस्ट, जोन डब्ल्यू व कान्हजेम्स वी. (2006), रिसर्च इन एजूकेशन, नई दिल्ली, प्रेन्टिस हॉल ऑफ़ इण्डिया

गेरेट, हेनरी ई. (2005), स्टैस्टिक्स इन साइकोलॉजी एण्ड एजूकेशन, नई दिल्लीः पैरागाँव इंटरनेशनल पब्लिशर्स

कृष्णलाल (2014), इमोशनल मैच्योरिटी, सेल्पफ कॉन्फिडेंस एण्ड एकेडमिक एचीवमेंट्स ऑफ़ अडोल्सेंस इन रिलेशन टू देयर जैन्डर एण्ड अर्वन रूरल बैकग्राउण्ड। अमेरिकन इंटरनेशनल जनरल ऑफ़ रिसर्च इन ह्यूमेनिटीज, आर्ट्स, 5 (2), 188-193

मंगल एस. के. (1999), एडवांस्ड एजूकेशनल साइकोलॉजी, नई दिल्लीः प्रिन्टस हॉल ऑफ़ इण्डिया

शनमुंगथन, वी. (2014), ए स्टडी ऑफ़ द प्रॉब्लम ऑफ़ एडोल्सेंस ऑफ़ हायर सैकेण्डरी कोर्स इन रिलेशन टू

www.ignited.in

एकेडमिक एचीवमेंट एंड सम सलेक्टेड वेरिएवल्स, इंटरनेशल एजूकेशनल ई जनरल 3 (2) 91-98

शर्मा, अनुप्रिया व बोहर, पदमा (2017), ए स्टडी ऑन इमोशनल मैचोरिटी एण्ड एकेडमिक एचीवमेंट ऑफ़ हायर सैकेण्डरी लेवल स्टूडेंट्स इंटरनेशनल जनरल ऑफ़ रिसर्च इन साइंस एण्ड इंजीनियरिंग 236-238

Corresponding Author

Geeta Dalal*

Research Scholar, Department of Education, Madhav University, Rajasthan

tayapawan0101@gmail.com